13

सुखी राजकुमार

मानव-सभ्यता के विकास-क्रम में मनुष्य ने अपने लिए सुख-सुविधाओं का विस्तार किया और समाज में रहना भी सीखा। बुद्धि के विकास ने सिर्फ़ उसके लिए सुख की ही सृष्टि नहीं की, वरन् उसकी भावनात्मक दुनिया को भी प्रभावित किया, उसे अन्य प्राणि-जगत से अधिक संवेदनशील बनाया। सभ्यता और समाज के विकास के साथ यह संवेदनशीलता दूसरों के सुख में सुखी और दूसरों के दुख में दुखी होने की क्षमता में विकसित होती गई और मनुष्यता के सर्वोच्च गुणों में गिनी जाने लगी।

अपने लिए जीने और दूसरों के लिए सोचने-करने की इन प्रवृत्तियों के बीच के द्वंद्व से मनुष्य-समाज लगातार घिरा रहता है। इन्हीं प्रवृत्तियों का सुंदर चित्रण करने वाली है अंग्रेज़ी लेखक ऑस्कर वाइल्ड की यह कहानी–सुखी राजकुमार।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- मानव-मन पर सीमित और व्यापक अनुभव के प्रभाव का अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- अपरिचय और परिचय की स्थितियों में मानव-व्यवहार की तुलना कर सकेंगे;
- अच्छी संगत से सद्गुणों का विकास होता है, इस विचार पर टिप्पणी लिख सकेंगे;
- धनी और निर्धन वर्ग की जीवन-स्थितियों की तुलना कर सकेंगे;
- राजनीतिक प्रतिनिधियों की स्वार्थपरता और असंवेदनशीलता का उल्लेख कर सकेंगे;
- रूप और कर्म के सौंदर्य पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर सकेंगे;
- कहानी के मार्मिक स्थलों की सराहना और कहानी की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

13.1 मूल पाठ

आइए, अब हम ऑस्कर वाइल्ड की कहानी 'सुखी राजकुमार' का ध्यानपूर्वक पाठ करें और उसका आनंद लें। आपकी सुविधा के लिए कठिन शब्दों के अर्थ हाशिए पर दिए जा रहे हैं।

सुखी राजकुमार

नगर में उत्तर की ओर एक ऊँचे से स्तंभ पर सुखी राजकुमार की प्रतिमा स्थापित थी। मूर्ति पर हल्का स्वर्ण-पत्र मढ़ा था, आँखों के स्थान पर दो चमकदार नीलम थे और तलवार की मूठ में एक बड़ा-सा लाल जड़ा था।

लोग उस प्रतिमा के सौंदर्य की बड़ी प्रशंसा करते थे।

दिन भर उड़ने के बाद एक गौरेया रात को नगर के समीप पहुँची।

"मैं ठहरूँ कहाँ?" उसने सोचा, "मैं समझ रही थी कि शहर मेरा स्वागत करेगा!"

इतने में उसने स्तंभासीन मूर्ति देखी।

"आहा! मैं यहीं ठहरूँगी! यह बहुत अच्छा स्थान है। यहाँ काफ़ी साफ़ हवा आ रही है।"

और वह मूर्ति के पैरों के पास उतर पड़ी।

उसने चारों ओर देखकर कहा- "मेरा शयनागार सोने का है" और वह पंखों में मुँह छिपाकर सोने जा रही थी कि एक पानी की बड़ी-सी बूँद टप से उस पर गिर पड़ी।

"ताज्जुब है," उसने कहा, "आकाश में एक भी बादल नहीं है- तारे साफ़ चमक रह हैं- फिर भी पानी बरस रहा है!"

इतने में दूसरी बूँद गिरी।

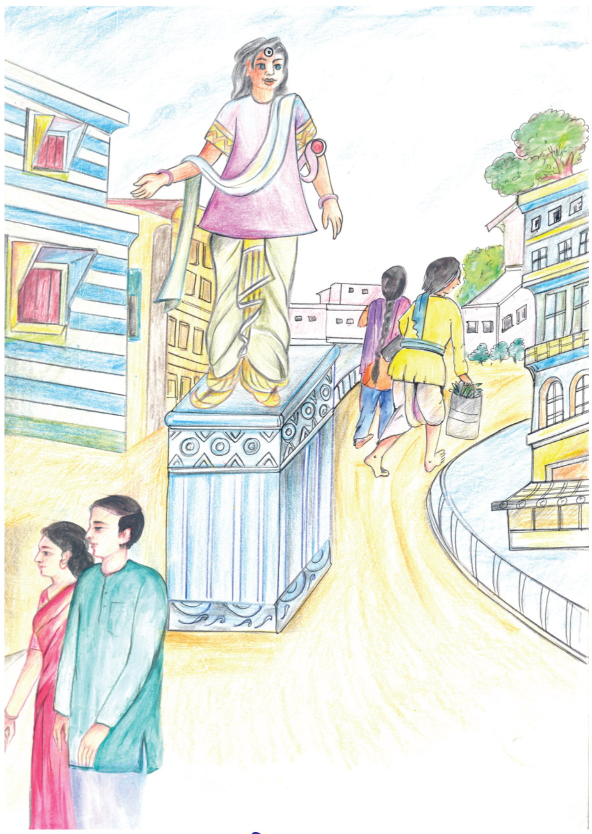

चित्र 13.1

शब्दार्थ

स्तंभ- खंभा

प्रतिमा- मूर्ति

स्वर्ण-पत्र- सोने के पत्तर

नीलम- नीले रंग का कीमती पत्थर

लाल- लाल रंग का कीमती पत्थर

स्तंभासीन- खंभे पर आसीन

शयनागर- सोने का स्थान (कक्ष)

ताज्जुब- आश्चर्य

इस प्रतिमा से फ़ायदा क्या, अगर यह वर्षा भी नहीं रोक सकती,'' उसने कहा, ''चलो कोई दूसरा आश्रय-स्थान ढूँढें।''

उसने पंख खोले और तीसरी बूँद गिर पड़ी।

उसने ऊपर देखा। राजकुमार की आँखें डबडबा रही थीं और उसके सुनहले गाल पर आँसू ढुलक रहे थे। उसका चेहरा इतना भोला था कि गौरेया को दया आ गई।

''तुम कौन हो?'' उसने पूछा।

''मैं सुखी राजकुमार हूँ।''

''फिर तुम रो क्यों रहे हो?'' पंख फड़फड़ाकर गौरैया ने कहा, ''तुमने तो मुझे बिलकुल भिगो दिया है!''

''जब मैं जीवित था''- मूर्ति ने उत्तर दिया- ''और मेरे वक्ष में मनुष्य का हृदय धड़कता था, तब मेरा आँसुओं से परिचय नहीं हुआ था। मैं आनंद-महल में रहता था, जहाँ दुख को प्रवेश करने की इज़ाजत नहीं थी। दिन में मैं अपने उद्यान में विलास करता था और रात को नृत्य में लगा रहता था। मेरे उद्यान के चारों ओर एक प्राचीर थी, किंतु मेरे चारों ओर इतना सौंदर्य था कि मैंने कभी बाहर देखने का प्रयत्न नहीं किया। मैं जीता रहा और मर गया। आज जब मैं मर गया हूँ, तो उन्होंने मुझे इतने ऊँचे पर स्थापित कर दिया है कि मैं संसार की सारी कुरूपता और दुख-दर्द देख सकता हूँ। मेरे ही नगर में इतना दुख है कि यद्यपि मेरा हृदय जस्ते का है, मगर फिर भी फटा जा रहा है।''

''अच्छा, तो राजकुमार ठोस सोने का नहीं है!'' गौरैया ने सोचा, मगर वह इतनी शिष्ट थी कि उसने यह बात ज़ोर से नहीं कही।

''दूर, बहुत दूर'', मूर्ति अपनी सुनहली आवाज़ में कहती रही, ''एक गंदी-सी गली में टूटा-फूटा मकान है, उसकी एक खिड़की खुली है.... उसके अंदर एक चौकी पर एक स्त्री बैठी है। उसका चेहरा दुबला और थका हुआ है और उसके हाथ सुई के घावों से क्षत-विक्षत हैं। वह रानी की सर्वसुंदरी अंगरक्षिका के नृत्य-वसन पर फूल काढ़ रही है। एक कोने में उसका बच्चा बीमार पड़ा है। उसे ज्वर है और वह फल माँग रहा है। गौरैया, नन्हीं गौरैया, क्या तुम मेरी तलवार की मूठ में जगमगाता हुआ लाल निकालकर उसे नहीं दे आओगी... मेरे पैर तो इस स्तंभ में जड़े हैं और मैं चल नहीं सकता।''

''दक्षिण देश में लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे नील नदी पर उड़ रहे होंगे और कमल के फूलों से वार्तालाप करने के बाद राजाओं के मकबरों में सोते होंगे। राजा रंगीन ताबूत में सो रहा होगा। वह पीले वस्त्र में लिपटा होगा और मसालों से उसका अंग-लेपन किया गया होगा। उसकी गर्दन में पुखराज का हार होगा और उसके हाथ सूखी पत्तियों की तरह होंगे!'' गौरैया ने कहा।

टिप्पणी

डबडबाना- आँखों में आँसू उमड़ आना

सुनहले- सोने की आभा वाले

वक्ष-छाती, सीना

इज़ाजत- अनुमति

उद्यान- बाग, उपवन

विलास- क्रीड़ा, सुख का उपभोग, आनंद करना

प्राचीर-परकोटा, दीवार

यद्यपि- हालाँकि

जस्ता- ख़ाकी रंग की एक धातु, जिसमें ताँबा मिलाकर पीतल बनता है

क्षत-विक्षत- लहूलुहान, घायल

सर्व सुंदरी- सबसे अधिक सुंदर स्त्री

अंगरक्षिका- शरीर की रक्षा के लिए नियुक्त स्त्री, बॉडीगार्ड

नृत्य-वसन- नाचते समय पहने जाने वाली पोशाक

ज्वर-बुखार

नील नदी- पश्चिम एशिया की एक नदी, जो दुनिया में सबसे बड़ी है

मकबरा- महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों (प्राय: राजाओं) के दफ़नाए जाने के स्थान पर बनी इमारत

ताबूत- शव को रखने वाला बक्स

अंग-लेपन- शरीर पर मलना

पुखराज- सुनहरे (पीले) रंग का कीमती पत्थर

वसंत– सारी ऋतुओं में वातावरण की दृष्टि से सबसे उपयुक्त (प्रियकर) ऋतु,

श्वेत-सफेद, संगमरमर– एक प्रकार का अत्यधिक चिकना पत्थर

प्रासाद-महल

छज्जा– बालकनी

भावोन्मेष– भाव का उदय (यहाँ भाव के आवेग में)

शिखर– सबसे ऊँचा हिस्सा

आकाशदीप– बाँस के सिरे पर बाँधकर जलाया जाने वाला दीया या लालटेन

मिस्र– उत्तर-पूर्वी अफ़्रीका का एक देश, जिसकी गिनती विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में होती है

गिरजाघर– ईसाई धर्म का प्रार्थना-स्थल

''गौरैया! गौरैया! सिर्फ़ आज रात को तुम मेरा काम कर दो। बच्चा प्यासा है– उदास भी है!''

''उँह! मुझे बच्चों से ज़रा भी स्नेह नहीं है!'' गौरैया ने कहा, ''पिछले वसंत में दो बच्चे रोज़ आकर मुझे ढेले मारा करते थे। यद्यपि मुझे चोट नहीं लगी, मैं बहुत तेज़ उड़ती हूँ, किंतु यह बड़ी ही अपमानजनक बात है।''

मगर, राजकुमार इतना उदास था कि गौरैया को दया आ गई।

''यहाँ बहुत सर्दी पड़ने लगी, लेकिन कोई बात नहीं, मैं आज तुम्हारा काम कर दूँगी।''

''धन्यवाद, नन्हीं गौरैया!'' राजकुमार ने कहा।

गौरैया ने राजकुमार की तलवार की मूठ से लाल निकाला और उसे अपनी चोंच में दबाकर उड़ चली। उड़ते वक्त वह गिरजाघर के शिखर के पास से गुज़री, जहाँ श्वेत संगमरमर से देवदूतों की मूर्तियाँ बनी थीं। वह उच्च प्रासाद के समीप से गुज़री और उसने नाच की आवाज़ सुनी। छज्जे पर एक सुंदर किशोरी अपने प्रेमी के कंधे पर हाथ रक्खे हुए आई।

''आह! तारे कितने सुंदर हैं, प्रेम की शक्ति भी कितनी अद्भुत है,'' उसने भावोन्मेष में कहा, ''मैं समझती हूँ कि अगले नृत्य के लिए मेरे वस्त्र तैयार हो जाएँगे। मैंने उन पर फूल कढ़वाने की आज्ञा दी है। मगर ये लोग देर कितनी लगाते हैं!''

वह नदी पर से गुज़री और जहाज़ के शिखरों पर लटकते हुए आकाशदीप देखे। अंत में वह उस टूटे-फूटे मकान के समीप पहुँची और भीतर झाँका। बच्चा बुखार के कारण बिस्तर पर तड़प रहा था। वह फुदककर भीतर पहुँची और उसने उस स्त्री के पास की मेज़ पर लाल रख दिया। माँ थककर सो गई थी। वह बच्चे के सिरहाने उड़कर पंखों से हवा करने लगी।

चित्र 13.2

''आह, कैसा अच्छा लग रहा है!'' बच्चे ने कहा, ''अब शायद मैं अच्छा हो रहा हूँ!'' और वह सो गया।

गौरैया उड़कर राजकुमार के पास वापस आ गई और उसने उसे सब हाल बताकर कहा– ''आश्चर्य है, यद्यपि इतनी ठंडक है, लेकिन मुझे ज़रा भी ठंड नहीं लग रही है!''

''इसलिए कि तुमने आज एक भलाई की है,'' राजकुमार ने कहा।

गौरैया सोचने लगी और सो गई। सोचने में उसे सदा झपकी आ जाती थी।

जब दिन उगा, तो वह नदी में गई और नहाई।

''अच्छा, आज रात को मैं मिस्र देश जाऊँगी!'' उसने सोचा। वह आज उमंग से भरी थी। उसने शहर की सभी इमारतें घूम डालीं और वह गिरजाघर के शिखर पर बहुत देर तक बैठी रही।

जब चाँद उगा तो वह राजकुमार के पास गई और बोली– ''तुम्हें मिस्र में किसी से कुछ कहलाना तो नहीं है– मैं अभी-अभी जाने के लिए तैयार हूँ।''

''गौरैया! गौरैया! नन्ही गौरैया! क्या तुम आज रात को और नहीं ठहर सकतीं,'' मूर्ति ने कहा, ''शहर में, दूर एक सीली हुई कोठरी में मुझे एक तरुण कलाकार दीख रहा है। वह अपनी कागज़ों से लदी मेज़ पर झुका है और उसके बगल में एक पात्र में सूखे हुए फूल लगे हैं। उसके बाल भूरे और सुनहले हैं, उसके होंठ अनार के फूल की तरह लाल हैं, उसकी आँखें बड़ी सपनीली हैं, वह रंगमंच के लिए नया नाटक लिख रहा है, मगर ठंड के कारण उसकी अँगुलियाँ नहीं चल रही हैं। अँगीठी में एक भी कोयला नहीं है और भूख से उसकी आँखों के सपने टूट रहे हैं।''

''मिस्र में सब मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। कल मेरे सब साथी दूसरे प्रपात तक उड़ जाएँगे, जहाँ नरकुल की झाड़ियों में दरियाई घोड़े सोते हैं और संगमूसा की शिला पर मेम्नान का देवता बैठा है। रात भर वह तारों की ओर देखता है। भोर का तारा जब डूबने लगता है, तो वह ख़ुशी से चीख़ पड़ता है और फिर चुप हो जाता है। दोपहर के समय वहाँ शेर आते हैं, जिनकी आँखें हरे रत्नों की तरह चमकती हैं और जिनकी गरज में प्रपात का स्वर डूब जाता है।''

मेम्नान– ग्रीक मिथक में इथोपिया का राजा। ट्रोजन राज परिवार के टिथोनस और इओस (उषा) का पुत्र। अपने चाचा प्रियम (Priam) की ओर से ग्रीक के विरुद्ध बहादुरी से लड़ा और एथाइलस के हाथों मारा गया। इओस के आँसुओं को देखकर ज्यूस ने उसे अमरत्व प्रदान किया। उसके साथी, जो पक्षियों में बदल गये, प्रतिवर्ष उसकी समाधि पर लड़ने और विलाप करने के लिए आते थे। मिस्र में उसका नाम थेबे के निकट अमेनहोतेप तृतीय की पत्थर की विशाल मूर्तियों के साथ जुड़ा है। उषाकालीन सूर्यकिरणें जब इन मूर्तियों का स्पर्श करती हैं, तो इनसे वीणा की झंकार सी ध्वनि निकलती है– इस ध्वनि के बारे में ऐसा विश्वास किया जाता है कि यह अपनी माँ की शुभकामनाओं के प्रति मेम्नान का प्रत्युत्तर है।

''लेकिन, केवल आज रात के लिए भी तुम न रुकोगी?''

टिप्पणी

सीली– सीलन भरी

तरुण– नौजवान

पात्र– जिसमें कुछ रखा जा सके (बर्तन, गमला फूलदान वगैरह)

सपनीली– सपने देखने वाली (आँखें)

रंगमंच– नाटक खेलने का स्थान

प्रपात– झरना

नरकुल– पतली लंबी पत्तियों तथा पतले गाँठदार डँठल वाला एक पौधा, जो कलम, चटाई आदि बनाने के काम आता है

संगमूसा– एक तरह का काला पत्थर

भोर– सुबह

गरज–गर्जना

टिप्पणी

ईंधन– ऊर्जा प्राप्त करने के लिए जलाया जाने वाला पदार्थ (कोयला, लकड़ी, डीजल, पेट्रोल आदि)

आँकना– मूल्य निर्धारित करना/तय करना

बंदरगाह– पानी के जहाज़ों के आगमन और प्रस्थान का स्थान

मस्तूल– जहाज़ के बीच में गाड़ा हुआ लंबा लट्ठा, जिसमें पाल बाँधा जाता है

कुंज– लताओं आदि से घिरा या ढँका हुआ स्थान

सौदा– ख़रीदे-बेचे जाने वाला सामान

''अच्छा! आज मैं और रुक जाऊँगी, क्या दूसरा लाल उसे दे आऊँ?'' गौरैया ने पूछा।

''अफ़सोस! मेरे पास अब कोई दूसरा लाल नहीं है। मेरे पास मेरी आँखें हैं, जो नीलम से बनी हैं, जो हज़ारों वर्ष पहले भारत से लाए गये थे। एक निकालकर उसे दे आओ। वह उसे बेचकर ईंधन और खाना ख़रीद लेगा।''

''प्यारे राजकुमार'', गौरैया ने सिसकते हुए कहा, ''यह तो मुझसे नहीं होगा और वह फूट-फूट कर रोने लगी।

''गौरैया! प्यारी गौरैया!'' राजकुमार बोला, ''तुम्हें मेरी बात माननी चाहिए।''

गौरैया ने उसकी आँख का नीलम निकाल लिया और कोठरी की ओर उड़ चली। एक छेद से वह अंदर घुस गई। कलाकार सिर झुकाए बैठा था, अतः उसने उसके पंखों की आवाज़ नहीं सुनी। जब उसने सिर उठाया, तो देखा कि मुर्झाए हुए फूलों पर बड़ा-सा नीलम रखा था।

''ओह, मालूम होता है, मेरा मोल लोग आँक रहे हैं। यह शायद किसी बड़े भारी प्रशंसक ने भेजा है। अब मैं अपना नाटक समाप्त कर लूँगा।''

गौरैया बंदरगाह की ओर जाकर एक जहाज़ के मस्तूल पर बैठ गई। वहाँ कुछ मज़दूर अपने सीने पर रस्सियाँ बाँधे नाँवें खींच रहे थे।

जब चाँद उगा, तो वह राजकुमार के पास आकर बोली– ''मैं तुमसे विदा माँगने आई हूँ!''

''गौरैया, प्यारी गौरैया! क्या आज रात को और नहीं ठहरोगी?''

''देखो, अब जाड़ा पड़ने लगा है। मिस्र में हरे-भरे खजूर के कुंजों पर गर्म धूप छाई होगी। मेरे साथी एक पुराने मंदिर में घोंसला बना रहे होंगे। प्यारे राजकुमार, मैं जा रही हूँ, मगर मैं तुम्हें भूल नहीं सकती। अगले वसंत में जब मैं लौटूँगी, तो तुम्हारे लिए एक लाल और एक नीलम लेती आऊँगी।''

''नीचे गली में'', राजकुमार ने कहा, ''एक लड़की खड़ी है। उसका सौदा नाली में गिर गया है और वह रो रही है। यदि वह खाली हाथ घर जाएगी, तो उसका पिता उसे मारेगा। उसके पैरों में जूता नहीं है, उसका सिर नंगा है। मेरी दूसरी आँख निकालकर उसे दे दो, तो वह मार से बच जाएगी।''

''कहो तो मैं आज रात भर और रुक जाऊँ, मगर मैं तुम्हारी आँख नहीं निकालूँगी। फिर तो तुम बिलकुल ही अंधे हो जाओगे!''

''गौरैया! प्यारी गौरैया!'' राजकुमार ने कहा– ''मैं जो कुछ कहता हूँ, उसे करो।''

उसने उसकी आँख निकाल ली और रोती हुई लड़की के हाथ में वह नीलम रख दिया। ''वाह कैसा रंगीन काँच है!'' लड़की ने कहा और हँसकर घर की ओर भागी।

टिप्पणी

गौरैया वापस आई।

''अब तुम अंधे हो'', उसने कहा, ''इसलिए मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगी।''

''नहीं-नहीं, गौरैया, अब तुम मिस्र देश को जाओ।''

''मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगी,'' गौरैया ने कहा और उसके पैरों पर सिर रखकर सो गई।

अगले दिन वह राजकुमार के कंधों पर बैठकर भाँति-भाँति की कहानियाँ सुनाने लगी- लाल बगुलों की कहानी, जो नील नदी के किनारे कतार में खड़े रहते हैं और मौका पाते ही झपटकर सुनहली मछलियाँ चोंच में दबाकर उड़ जाते हैं; स्फ़िन्क्स की मूर्ति की कहानी, जो रेगिस्तान में रहती है और सर्वज्ञ है; चंद्रमा की घाटियों के राजा की कहानी, जो बड़े-से संगमरमर की पूजा करता है और उस हरे साँप की कहानी, जो डालियों में लिपटा रहता है और बीस पुरोहित उसे दूध पिलाते हैं।

''प्यारी गौरैया, तुमने मुझे इतनी आश्चर्यजनक वस्तुएँ बताईं, लेकिन इनसे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक है– मनुष्य का दुख-दर्द, दुख से बड़ा कोई रहस्य नहीं! जाओ, मेरे नगर को देखकर बताओ कि वहाँ क्या हो रहा है?''

गौरैया शहर पर उड़ने लगी। अमीर अपने महलों में रंगरलियाँ मना रहे थे और गरीब हाथ फैलाए भीख माँग रहे थे। वह अँधेरी गलियों पर से उड़ी और उसने देखा कि भूखे बच्चे ज़र्द चेहरे लटकाए हुए सूनी निगाहों से देख रहे हैं। एक पुलिया के नीचे दो बच्चे सिकुड़े हुए बैठे हैं- ''भागो यहाँ से!'' चौकीदार बोला और वे बारिश में भीगते हुए चल दिए।

वह वापस आ गई और उसने राजकुमार को यह सब हाल बताया।

''मैं सोने से मढ़ा हूँ'', राजकुमार बोला, ''इसमें से स्वर्ण-पत्र निकालकर मेरी निर्धन प्रजा में बाँट दो।''

गौरैया एक के बाद एक स्वर्ण-पत्र निकालकर बाँटती रही। अंत में राजकुमार बिल्कुल मटमैला और मनहूस दीखने लगा, लेकिन बच्चों के चेहरे पर गुलाबी किरणें झलक आईं

कतार-पंक्ति, लाइन

पुरोहित- पूजा-अर्चना कराने वाला व्यक्ति

रंगरलियाँ-मज़े के लिए किए जाने वाले क्रियाकलाप

ज़र्द-पीला

मटमैला- मिट्टी के रंग का (यहाँ भद्दा)

मनहूस- उदासी भरा, अशुभ

चित्र 13.3

टिप्पणी

पाला- हिम, तुषार, बर्फ़

फ़र- रोएँ, रोएँदार खाल

मेयर- नगर-प्रमुख

भट्ठी- बड़ा चूल्हा या अँगीठी

कॉरपोरेशन- निगम

देवदूत- फ़रिश्ता

मूल्यवान- कीमती

विहार करना- आनंद के लिए सैर करना, क्रीड़ा करना

और वे गलियों में खेलने लगे।

उसके बाद ओले गिरे और फिर पाला पड़ने लगा। सड़कें चमकदार बर्फ़ से ढँककर चाँदी की मालूम होने लगीं। छज्जों से बड़े-बड़े बर्फ़ के टुकड़े लटकने लगे। सभी फ़र के ओवरकोट पहनकर निकलने लगे।

बेचारी नन्हीं गौरैया ठंड से अकड़ने लगी; लेकिन वह उसे इतना प्यार करती थी कि उसे वह छोड़ नहीं सकती थी। अंत में उसे लगा कि अब उसके दिन करीब है। अब उसके परों में केवल इतनी शक्ति शेष थी कि वह राजकुमार के कंधों तक एक बार उड़ सकती थी।

"अलविदा राजकुमार!" वह बोली, "क्या तुम मुझे अपना हाथ चूमने दोगे?"

"ओहो!" बड़ी ख़ुशी हुई सुनकर कि आख़िर तुम अब मिस्र देश जाने के लिए तैयार हो।"

"मिस्र नहीं, मैं मृत्यु के देश जाने की तैयारी कर रही हूँ।"

और उसने राजकुमार को चूमा और मरकर उसके पैरों के पास गिर पड़ी।

इसी समय मूर्ति के अंदर से कुछ आवाज़ हुई, जैसे कुछ टूट गया हो। वास्तव में, मूर्ति के अंदर का जस्ते का दिल चटख़ गया था। इस समय पाला गज़ब का था।

दूसरे दिन मेयर अन्य सदस्यों के साथ टहल रहा था। जब वे वहाँ से गुज़रे, तो मेयर ने उसकी ओर देखा और कहा- "कितनी भद्दी लग रही है यह प्रतिमा!"

"हाँ, कितनी भद्दी है," सदस्यों ने कहा, जो हमेशा मेयर की हाँ-में-हाँ मिलाते थे।

"उसकी तलवार से लाल गिर गया है, उसकी आँखें गायब हैं और उसका सोना उतर गया है। यह तो बिलकुल पत्थर का भिखारी मालूम देता है!"

"बिल्कुल! बिल्कुल पत्थर का भिखारी!" सदस्यों ने कहा।

"लो, उसके पैर पर एक चिड़िया भी मरी पड़ी है," मेयर ने कहा, "कल घोषणा करवा दो कि यहाँ चिड़ियाँ न मरने पाएँ।"

सदस्यों ने फ़ौरन नोट कर लिया। और, उसके बाद उन्होंने मूर्ति हटा ली।

"चूँकि अब वह सुंदर नहीं, अत: उसका कोई उपयोग नहीं हैं," नगर के एक सुप्रसिद्ध कलाविज्ञ ने कहा।

उसके बाद उन्होंने मूर्ति भट्टी में गलाई और कॉरपोरेशन की बैठक में यह प्रश्न उठा कि इसका क्या किया जाए!

''यहाँ पर एक दूसरी मूर्ति होनी चाहिए,'' मेयर ने कहा, ''मैं समझता हूँ, मेरी मूर्ति ठीक रहेगी।''

''नहीं, मैं समझता हूँ मेरी!'' हरेक सदस्य ने कहा, और वे बराबर झगड़ते रहे।

लोहा गलाने के कारखाने में मिस्त्री ने कहा– ''कैसा अचरज है, यह टूटा हुआ जस्ते का दिल भट्‌टी में पिघल ही नहीं रहा है।''

उसने एक कूड़ेखाने में उसे फेंक दिया। वहीं गौरैया की लाश भी पड़ी थी।

ईश्वर ने अपने देवदूत से कहा– ''मेरे लिए नगर की दो सबसे मूल्यवान वस्तुएँ ले आओ।''

देवदूत वह जस्ते का दिल और गौरैया की लाश ले आया।

''ठीक, बिलकुल ठीक!'' ईश्वर ने कहा– ''मेरे स्वर्ग की डालों पर यह गौरैया सदा चहकेगी और मेरे उपवन में राजकुमार सदा विहार करेगा।''

13.2 आइए समझें

आप इस पुस्तक में दो और कहानियाँ पढ़ रहे हैं। कहानी को समझने के आधारभूत तत्त्वों से आप परिचित हैं। आइए, अब हम इस कहानी को समझने का प्रयास करें।

13.2.1 कथावस्तु

यह कहानी अन्य दोनों कहानियों– 'बहादुर' और 'शतरंज के खिलाड़ी' से आकार में छोटी है। इसे पढ़ने में आपको 20 से 25 मिनट का समय लगा होगा। इस तौर पर यह कहानी कथानक के लिए आदर्श माने जाने वाली समय-सीमा का निर्वाह करती है। कथानक भी बहुत संक्षिप्त है।

'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में प्रेमचंद ने शुरू में एक 'भूमिका' द्वारा अपनी बात की प्रस्तावना की है। यहाँ ऑस्कर वाइल्ड ने कहानी के आख़िर में अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए जैसे 'उपसंहार' प्रस्तुत किया है। नगर के मेयर और उसके साथियों के माध्यम से उन्होंने व्यवस्था के कर्णधारों की असंवेदनशीलता और स्वार्थपरता को उजागर किया है, जो अपनी-अपनी मूर्ति स्थापित करवाने के फेर में प्रतिमा को गलवाने और गौरैया की लाश को कूड़े में फिंकवाने का आदेश देते हैं। निर्धन और दुखी जनता के दर्द से हर क्षण पिघलते रहने वाला 'सुखी राजकुमार' का जस्ते का दिल भट्‌टी की तेज़ आग में भी नहीं पिघलता। ईश्वर के आदेश पर उसके देवदूत नगर की सबसे मूल्यवान वस्तुओं के रूप में राजकुमार के दिल और गौरैया के शव को ले जाते हैं। ईश्वर इन दोनों से बहुत प्रसन्न है और राजकुमार व गौरैया को अपना आशीर्वाद प्रदान करता है।

आइए देखें कि इस कहानी की कथावस्तु क्या है? यानी लेखक हमसे क्या कहना चाहता है? क्या बाँटना चाहता है? वह हमारे समाने किन बिंदुओं को उद्घाटित करना चाहता है?

सबसे पहले लेखक हमें बताता है कि नगर में एक सुखी राजकुमार की प्रतिमा थी। यह प्रतिमा सोने से मढ़ी थी तथा इसमें नीलम और लाल जड़े थे। लोग इसके सौंदर्य की बड़ी प्रशंसा करते थे। तीन वाक्यों में यह वर्णन है, जिससे संकेत मिलता है कि प्रतिमा के सौंदर्य की चर्चा का आधार संभवत: सोना, नीलम और लाल थे। अंत में इसकी पुष्टि भी होती है, जब इन चीज़ों के न रहने पर मेयर, सभासद और सुप्रसिद्ध कलाविज्ञ उस प्रतिमा की निंदा करते हैं। यानी, लेखक कहना चाहता है कि लोग सौंदर्य की तलाश प्राय: उसकी कीमत और उसके वैभव से करते हैं।

इसी क्रम में एक गौरैया का भी ज़िक्र आता है, जो उस नगर के ऊपर से उड़कर मिस्र देश की ओर जा रही है, लेकिन रात्रि हो जाने के कारण आश्रय की तलाश में उस मूर्ति तक पहुँच जाती है।

लेखक हमें बताता है कि यह प्रतिमा वास्तव में एक सुखी राजकुमार की थी। एक ऐसे राजकुमार की, जो आनंद-महल में रहता था और जिसका कभी भी दुख से सामना नहीं हुआ था, क्योंकि उसके चारों ओर केवल ऐश्वर्य और वैभव था। इसी ऐश्वर्य और वैभव, इन्हीं सुख-सुविधाओं में डूबा वह अपने में मग्न रहता था और इसके परे की वास्तविकताओं को जानना भी नहीं चाहता था। लेखक ने राजकुमार के बयान में संकेतों से काम लिया है। पहला संकेत 'वक्ष में मनुष्य का हृदय धड़कने' में है, यानी जब तक वह मनुष्य था- भोग कर सकता था, तब तक वह आत्मकेंद्रित रहा, उसने दुख के बारे में सोचा तक नहीं; लेकिन अब, जबकि वह मूर्ति बन गया, तो उसे दूसरों के दुख दीखने लगे। एकाएक यह बात उलटी मालूम होती है, पर लेखक इस विडंबना के ज़रिए मनुष्य के स्वभाव पर टिप्पणी कर रहा है कि मनुष्य अपनी मौज-मस्ती में डूबा रहता है और मानवीय गुणों-करुणा, सहानुभूति, समानुभूति - से दूर रहता है। दूसरा संकेत 'उद्यान के चारों ओर की प्राचीर' में है। यह प्राचीर यानी दीवार दरअसल ईंट-पत्थर की नहीं है, बल्कि मनुष्य की अपनी खींची गई दीवार है, जो सुख-सुविधाओं को न खोने की इच्छा की है। तीसरा संकेत 'चारों ओर इतना सौंदर्य' में है; यहाँ भी रूप, सुख, वैभव, ऐश्वर्य को ही सौंदर्य माना गया है। इसकी चर्चा पहले की जा चुकी है।

राजकुमार के अनुभव-क्षेत्र का जब विस्तार होता है, तो उसकी अपने आप में डूबे रहने की प्रवृत्ति भी टूटती है। उसकी संवेदना का भी विस्तार होता है। मन में करुणा की भावना जागती है और वह दूसरों के दुख से दुखी होने लगता है। उनका दुख उसे अपना दुख लगने लगता है। इस भाव-स्थिति को हम समानुभूति कहते हैं। राजकुमार चूँकि अब प्रतिमा के रूप में है और वह चल-फिर नहीं सकता, इसलिए वह गौरैया से आग्रह करता है कि वह उसकी भावना को कार्यरूप दे। इस क्रम में वह एक स्त्री, जिसका बच्चा बीमार है; एक तरुण कलाकार, भूख से जिसके सपने टूट रहे हैं और एक लड़की, जिसके पैसे नाली में गिर गए हैं तथा जिसे पिता की डाँट का डर है- का ज़िक्र करता है और उन्हें अपनी तलवार की मूठ का लाल और आँखों के नीलम दे आने का आग्रह करता है। लेखक इनमें से

एक या दो बातों से काम चला सकता था, मगर उसने तीनों बातों को कथानक में स्थान दिया। जानते हैं क्यों? क्योंकि लेखक हम तक कुछ और भी पहुँचाना चाहता है। वह 'कुछ' यह है कि जब तक हम किसी व्यक्ति या विषय के बारे में कुछ जानते नहीं है, हम उसमें रुचि नहीं लेते, लेकिन जब हम धीरे-धीरे उसके बारे में जानने लगते हैं, तो हमारे भीतर उस व्यक्ति या काम के प्रति लगाव पैदा होता है, जो बाद में निष्ठा और समर्पण में बदल जाता है। गौरैया जब नगर में आती है, तो मूर्ति को अपना आश्रय-स्थल बनाती है, क्योंकि वह सोने की है और वहाँ साफ़ हवा आती है। मगर, जैसे ही पानी की बूँद उस पर गिरती है, तो वह उस स्थान को छोड़ने का फ़ैसला करती है। फिर राजकुमार की आँखों में आँसू और उसके चेहरे का भोलापन उसमें थोड़ी दया पैदा करते हैं। और फिर जैसे-जैसे वह राजकुमार के गुणों- दया, करुणा, प्रेम, समानुभूति, त्याग, बलिदान आदि- से परिचित होती जाती है, वह दक्षिण देश जाने के अपने कार्यक्रम को छोड़कर उसी के सान्निध्य में (साथ) रहने का निर्णय लेती है।

यह तो हुई व्यक्ति की बात, अब देखें कि राजकुमार के कामों में उसकी दिलचस्पी का क्या हाल है?

जब राजकुमार मेहनत से फूल काढ़ने वाली स्त्री और बीमार बच्चे के लिए लाल पहुँचाने का आग्रह करता है, तो गौरैया पहले तो अपने कार्यक्रम का और फिर बच्चों के प्रति अपनी चिढ़ का ज़िक्र करके इस काम में अपनी अरुचि प्रकट करती है। मगर, राजकुमार के प्रति विकसित हुए लगाव के कारण वह तैयार हो जाती है। दूसरी बार, जब राजकुमार तरुण कलाकार को नीलम दे आने का आग्रह करता है, तो गौरैया फिर मिस्र जाने की अपनी उमंग और उल्लास में डूब जाती है, पर काम करने के लिए तैयार हो जाती है। मगर, राजकुमार की आँख निकालने की सोचकर वह विह्वल हो उठती है। इस बार काम न करने का बहाना नहीं है, बल्कि राजकुमार के प्रति उसके प्रेम का प्रगाढ़ होना है, जो राजकुमार की त्याग की भावना के कारण है। फिर भी, राजकुमार का ही ख़्याल करके वह यह काम कर डालती है। तीसरी बार, गौरैया दूसरी आँख निकालने से इन्कार करती है, पर अपने कार्यक्रम को रद्द कर देने को तैयार है। यह राजकुमार के प्रति उसके प्रेम का प्रमाण है। राजकुमार के पुनः आग्रह पर वह दूसरा नीलम उस लड़की को दे तो आती है, पर राजकुमार के अंधे हो जाने के कारण मिस्र जाने का कार्यक्रम त्याग देती है। राजकुमार द्वारा चले जाने का आग्रह करने पर भी वह नहीं जाती। उसका प्रेम यहाँ समर्पण में बदल जाता है। वह उसका मन लगाने के लिए उसे तरह-तरह की कहानियाँ सुनाती है, नगर का हाल-चाल बताती है और मूर्ति से स्वर्ण-पत्र ले जाकर निर्धन प्रजा में बाँटती रहती है। यहीं आकर वह स्वयं भी समानुभूति का अनुभव करने लगती है। यानी, अब व्यक्ति के साथ-साथ उसका विषय से भी जुड़ाव हो जाता है, उसमें कर्म के प्रति निष्ठा जाग जाती है। यहाँ तक कि ठंड बढ़ती जाती है, पर गौरैया नगर को छोड़कर नहीं जाती और अपने प्राण त्याग देती है। इस तरह परिचय बढ़ते जाने के साथ-साथ क्रमशः गौरैया के भीतर उन्हीं सद्गुणों का विकास होता जाता है, जो राजकुमार के भीतर विकसित हुए थे।

'सुखी राजकुमार' के कथानक को बुनते समय लेखक ने बड़े ही कौशल से समाज के धनी और निर्धन वर्ग के जीवन और व्यवहार की विषमताओं को भी उभारा है। पहला संदर्भ तो राजकुमार के मनुष्य-जीवन और प्रतिमा के रूप में स्थापित होने का है, जिसके विषय में आप जान चुके हैं। दूसरा संदर्भ राजकुमारी की सर्वसुंदरी अंगरक्षिका का है। कहानीकार उसकी पोशाक पर फूल काढ़ने वाली स्त्री के श्रम (सुई से हाथ का क्षत-विक्षत होना, चेहरा दुबला और थका होना, थककर सो जाना) और उसकी जीवन-स्थितियों (बच्चे का बुखार से तड़पना, बच्चे के लिए फल न ला सकना) का ज़िक्र करता है, तो गौरैया को उसके घर तक पहुँचाने से पहले उस ऊँचे महल के छज्जे के ऊपर से भी गुज़ारता है, जहाँ वह सुंदरी अंगरक्षिका प्रेमी के कंधे पर हाथ रखे प्रेम की बात करती है और श्रम करने वाली स्त्री के बारे में नाराज़गी के स्वर में कहती है- ''मगर ये लोग कितनी देर लगाते हैं।'' इसी तरह बड़े-बड़े जहाज़ों के साथ-साथ मज़दूरों के सीने पर रस्सियाँ बाँधकर नाव खींचने का ज़िक्र, अमीरों के महलों में रंगरलियाँ मनाने के साथ-साथ गरीबों के हाथ फैलाकर भीख माँगने का ज़िक्र भी इसी वैषम्य को उजागर करने के लिए है।

इस कहानी में लेखक ने सौंदर्य पर कई दृष्टियों का उद्घाटन किया है। आरंभ में हम राजकुमार की सौंदर्य-दृष्टि और उसकी प्रतिमा को सुंदर मानने वालों के बारे में पढ़ चुके हैं। राजकुमार सुख-सुविधाओं, ऐश्वर्य-विलास आदि में सुंदरता तलाशता है, तो लोग उसकी प्रतिमा के रूप और कीमत में। सौंदर्य का एक और रूप है, वह है– रहस्य और रोमांच में, अद्भुत होने में। गौरैया मिस्र देश के संदर्भ में अपनी जिन कल्पनाओं की चर्चा करती है, उनमें ऐश्वर्य के साथ-साथ अद्भुत और रहस्यमयी चीज़ों का उल्लेख है। इसी तरह गौरैया राजकुमार को लाल बगुले, स्फ़िन्क्स की मूर्ति, चंद्रमा की घाटियों के राजा, हरे साँप आदि अनोखे प्राणियों और वस्तुओं की कहानियाँ सुनाती है। इसके विपरीत लेखक राजकुमार की प्रतिमा से कहलवाता है- ''प्यारी गौरैया, तुमने मुझे इतनी आश्चर्यजनक वस्तुएँ बताईं, लेकिन इनसे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक है– मनुष्य का दुख-दर्द। दुख से बड़ा कोई रहस्य नहीं।'' इस तरह लेखक सौंदर्य के 'अद्भुत' या 'सामान्य' में होने की दृष्टियों का उल्लेख करता है और पूरी कहानी पढ़ने से पता लगता है कि उसका झुकाव 'सामान्य' में सौंदर्य देखने की ओर है।

कहानी के अंत में मेयर और उसके सभासद तथा नगर का कलाविज्ञ- सभी की दृष्टि 'रूप' में सौंदर्य को तलाशने की है। उनको अब सुखी राजकुमार 'पत्थर का भिखारी' मालूम होता है, क्योंकि उसके स्वर्ण-पत्र (त्वचा की कांति), नीलम (आँखें) और लाल (शानोशौकत) अब गायब हो चुके हैं और वह मटमैला और मनहूस दिखाई देने लगा है। लेकिन, ईश्वर की दृष्टि में वह अब सुंदर है, क्योंकि उसका सौंदर्य उसके कर्मों में निहित है। तो, इस तरह सौंदर्य रूप में निहित है या कर्म में- यह प्रश्न भी लेखक हमारे सामने रखता है। इसकी पुष्टि राजकुमार के प्रति गौरैया के व्यवहार से भी होती है। जैसे-जैसे राजकुमार की प्रतिमा कुरूपता की तरफ़ बढ़ती है, गौरैया का उसके प्रति प्रेम, निष्ठा और समर्पण बढ़ता जाता है; क्योंकि उसके रूप-सौंदर्य के कम होने के पीछे उसके

कर्म-सौंदर्य का विकसित होना है, जिसमें वह भी भागीदार है। गौरैया की यह भागीदारी भी ईश्वर द्वारा सराही जाती है और वह कूड़े के ढेर से उठकर स्वर्ग की डालियों की हकदार बनती है।

मेयर और सभासदों के ज़रिए लेखक ने आज की व्यवस्था और राजनेताओं की असंवेदनशीलता और स्वार्थपरता पर तीख़ा व्यंग्य किया है। जिस तरह 'अंधेर नगरी' में नगर देखने में सुंदर लगता है, पर वहाँ व्यवस्था सुचारु नहीं है। राजा विलास में डूबा है और मंत्री आदि उसकी चापलूसी में। उसी तरह, यहाँ मेयर भी अविवेकी और स्वार्थतत्पर है और सभासद 'हाँ-हाँ' करने वाले। वहाँ राजा भी वैकुंठ जाना चाहता है और उसके दरबारी भी, यहाँ मेयर अपनी मूर्ति लगवाना चाहता है और उसके सभासद भी। हम अपने परिवेश में भी ऐसी स्थितियाँ देखते हैं और समझते हैं कि ये हमें आगे चलकर किसी भयानक संकट की ओर ले जा सकती हैं, सोचिए और अपने विचार यहाँ लिखिए:

पाठगत प्रश्न-13.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. नगर के लोग राजकुमार की प्रतिमा की तारीफ़ करते थे, क्योंकि-

   (क) जब वह जीवित था, तो लोगों की सहायता करता था। ☐

   (ख) उसकी प्रतिमा में बहुमूल्य वस्तुएँ लगी थीं। ☐

   (ग) मूर्ति बनने पर राजकुमार का आत्म-विस्तार हो गया था। ☐

   (घ) प्रतिमा में विश्व-भर के कलाकारों की प्रतिभा लगी थी। ☐

2. मनुष्यों को नहीं, एक मूर्ति को दूसरों के दुख दिखते हैं- इसमें क्या है?

   (क) विडंबना ☐ (ख) मनुष्य का स्वभाव ☐

   (ग) चमत्कार ☐ (घ) मनुष्य-विरोधी भाव ☐

13.2.2 चरित्र-चित्रण

आप यह तो समझ ही चुके हैं कि कहानी की जान उसकी कथावस्तु होती है और कथानक उसका ढाँचा। इस ढाँचे को सजीवता प्रदान करते हैं उसके पात्र या चरित्र। उन्हीं के द्वारा कथानक आगे बढ़ता है और हम उसे महसूस कर पाते हैं। कहानी की समय-सीमा कम होती है, अत: पात्र भी सीमित होते हैं। इस कहानी में तो सिर्फ़ दो ही मुख्य पात्र हैं। एक राजकुमार की मूर्ति और दूसरी गौरैया। इनके अतिरिक्त प्रसंगवश कुछ पात्र और आ जाते हैं, जिनकी भूमिका सिर्फ़ उस हिस्से को या कही जाने वाली बात को

थोड़ा उजागर कर देने की है। ये गौण पात्र हैं! इन पर हम 'वातावरण' शीर्षक के अंतर्गत चर्चा करेंगे।

सुखी राजकुमार

सुखी राजकुमार की प्रतिमा इस कहानी का केंद्र-बिंदु है। इसलिए हम उसे कहानी का मुख्य पात्र मान सकते हैं। अब आप कहेंगे कि प्रतिमा भी भला कहीं कहानी की मुख्य पात्र हो सकती है। पात्र होने के लिए उसे मनुष्य या कम-से-कम जीवित प्राणी तो होना ही चाहिए न ! यहाँ यह जान लेना ज़रुरी है कि विश्व-भर में कहानी की परंपराओं के विकास-क्रम में मानवेतर यानी मनुष्य के अलावा अन्य प्राणी कहानियों के पात्र बनते रहे हैं। अपने यहाँ भी 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश' में पशु-पक्षी कहानियों के पात्र हैं। इनके अतिरिक्त 'सिंहासन बत्तीसी' में पुतली भी पात्र है। 'विक्रम और बेताल' की कहानियाँ भी आपने सुनी-पढ़ी होंगी। इनमें बेताल (जो जीवित मनुष्य नहीं है) प्रमुख पात्र है। दरअसल, कहानीकार विशेष प्रयोजन से अपने पात्रों का चुनाव करता है।

'सुखी राजकुमार' कहानी में प्रतिमा को पात्र बनाने का विशिष्ट उद्देश्य है। कहानीकार समाज में मानवीय संवेदनाओं के तार-तार हो जाने की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करना चाहता है और उनके ही सर्वोपरि होने का संदेश देना चाहता है। इसके लिए वह प्रतिमा को केंद्रीय पात्र के रूप में प्रस्तुत करता है तथा इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुखी राजकुमार के जीवन-काल का भी ज़िक्र करता है। जीवित राजकुमार और प्रतिमा के रूप में स्थापित राजकुमार की जीवन-दृष्टि में अद्‌भुत कन्ट्रास्ट (वैषम्य) है। जीवित रहते हुए वह भोग-विलास में डूबा रहता है और अपने से बाहर की दुनिया के बारे में अनजान बना रहता है, किंतु प्रतिमा के रूप में स्थापित होने पर उसे अपने नगर में चारों ओर दुख के दर्शन होते हैं और अब यद्यपि उसका 'हृदय जस्ते का है, पर फटा जाता है।' उसमें मानवीय संवेदनाओं का ज्वार आने लगता है। उसकी इन संवेदनाओं को कार्यरूप में परिणत करने का काम भी एक मानवेतर प्राणी (नन्हीं गौरैया) द्‌वारा ही होता है। यहाँ पर यह भी महत्त्वपूर्ण है कि वह जिन मनुष्यों-नृत्य-वसन पर फूल टाँकने वाली स्त्री और उसका बीमार बच्चा, तरुण कलाकार, सौदा नाली में गिरा चुकी लड़की आदि के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करता है, वे भी उस संवेदना को महसूस नहीं करते। वे या तो अनजान रहते हैं, या अपने उद्‌यम की उपलब्धि समझते हैं, या फिर कौतूहल मात्र से ग्रस्त होते हैं। बाद में, मेयर और उसके साथियों के व्यवहार के माध्यम से इस वैषम्य को और ज़्यादा उभारा गया है।

कहानी के आरंभ में हम एक सुखी राजकुमार की प्रतिमा से रू-ब-रू होते हैं, जिसका शरीर 'सोने के पत्तरों से मढ़ा था, आँखों के स्थान पर दो चमकदार नीलम थे और तलवार की मूठ में एक बड़ा-सा लाल जड़ा था' और 'लोग उस प्रतिमा के सौंदर्य की बड़ी प्रशंसा करते थे।' हमें लगता है कि अपने वैभवपूर्ण सौंदर्य की प्रशंसा के कारण यह राजकुमार 'सुखी' होगा, लेकिन अगले ही क्षण हमें पता लगता है कि यह राजकुमार सुखी नहीं है, क्योंकि उसकी उन सुंदर आँखों से आँसू की बूँदें गिर रही हैं। कदाचित् यह इसलिए है

कि उसके अकेलेपन और दुख को बाँटने वाला कोई दूसरा (नन्हीं गौरैया) अब उसके पास है। वह गौरैया को बताता है कि जब वह जीवित था, तो आनंद-महल में रहता था, सुख-सुविधाओं और भोग-विलास में डूबा रहता था, उसने कभी दुख का साक्षात्कार नहीं किया था, क्योंकि उसके चारों और इतना सौंदर्य था कि उसने कभी बाहर देखने का प्रयत्न ही नहीं किया। यानी, जीवित रहते वह अपने आप में मस्त रहने वाला प्राणी था। लेकिन, मूर्ति के रूप में ऊँचे स्थान पर स्थापित हो जाने पर उसे उस आत्मबद्धता से मुक्ति मिली और नगर में रहने वाले लोगों के हालचाल पता लगने लगे। उसने पाया कि नगर की अधिकांश जनता बहुत बुरे हाल में जी रही है। रोग, निर्धनता, भुखमरी से ग्रस्त है। कुछ लोग ज़रूर ऐशोआराम की ज़िंदगी जी रहे हैं, पर वे अन्य अभावग्रस्त लोगों की वास्तविकता के प्रति उपेक्षा का भाव रखते हैं। उसका हृदय, जो अब मनुष्य का संवेदनशील कोमल हृदय नहीं, बल्कि ठोस धातु जस्ते का बना है, इस दुखी समाज को देखकर फटने लगता है। उसमें मानवीय संवेदनाओं का संचार होता है। व्यापक जनता का दुख उसका अपना सुख बन जाता है और वह अपने वैभव को त्यागकर, अपने अंगों का भी प्रतिदान करके उनके दुखों को दूर करना चाहता है। वह गौरैया से बहुत मार्मिक शब्दों में बार-बार आग्रह करके अपनी संवेदनाओं को कार्यरूप में परिणत करता है। यहाँ तक कि वह अब अपनी 'सुखी राजकुमार' वाली पहचान से 'पत्थर के भिखारी' वाली पहचान तक पहुँच जाता है। मगर, अब उसे पूरे तौर पर संतोष है और वह वास्तविक रूप में सुखी है। यानी असली सुख अपने शरीर के लिए भोग-विलास में नहीं, बल्कि अपने तन-मन-धन को लुटाकर भी मानवता का भाव अनुभव करने में है। वास्तविक सौंदर्य रूप-रंग, वेशभूषा, आभूषण-अलंकार में नहीं, बल्कि मानवता के लिए समर्पित आत्मा के सौंदर्य में है। इसकी पुष्टि कहानी के अंत में ईश्वर द्वारा उसे स्वर्ग के उद्यान में स्थान देने से भी होती है।

राजकुमार के हृदय में मानवता का भाव जागता है, तो उसकी भाषा भी मानवीय कोमलता और प्रेम से भर उठती है। इसीलिए तो वह गौरैया से अत्यधिक विनम्रता और अनुरोध के स्वर में अपनी बात कहता है। उसके आग्रह में आदेश का नहीं, याचना का भाव रहता है। उसकी संवेदना चूँकि वास्तविक हैं, इसीलिए वह अपना सर्वस्व अर्पित करने तक तो गौरैया को रोकने की भरसक कोशिश करता है, पर सब कुछ लुटा देने के बाद उसे अपने साथ भर के लिए नहीं रोकना चाहता। अब वह उससे आग्रह करने लगता है कि वह अपने पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अपने साथियों के पास दक्षिण दिशा को रवाना हो जाए।

इस पात्र पर विचार करते हुए एक बात बहुत महत्त्वपूर्ण मालूम होती है, वह यह कि दुखों को देखकर पिघलने वाला हृदय लोहा गलाने के कारखाने की भट्टी में भी नहीं पिघलता। आख़िर ऐसा क्यों ? ज़रूर कहानी-लेखक हम से कुछ और कहना चाहता है, लेकिन वह सीधे न कहकर हमें सोचने के लिए मौका देता है। आप सोचिए कि इसका क्या आशय होगा ? क्या वह हमें यह संकेत करता है कि हृदय मानवीय संवेदनाओं से द्रवीभूत हो सकता है, पर दूसरों के स्वार्थों की पूर्ति के अनुरूप ढलने को तैयार नहीं है अर्थात् सच्ची